



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 10

www.csir.res.in

अक्टूबर 2023

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने दिल्ली में सीएसआईआर मुख्यालय से स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) अभियान के अंतर्गत 'रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर' को हरी झंडी दिखाई

इस वर्ष 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक मनाए गए स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) अभियान के अनुरूप, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ), कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्यमंत्री, डॉ. जितेंद्र सिंह ने नई दिल्ली के अनुसंधान भवन में क्रांतिकारी "रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर" का उद्घाटन किया।

समारोह के दौरान, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि "रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर" परियोजना स्वच्छ भारत

है। उन्होंने कहा कि यह न केवल परिवहन दक्षता और लागत में कटौती को बढ़ाती है बल्कि इसके बाद के चरण में



झंडी दिखाए जाने के (फ्लैग-ऑफ)

को बढ़ावा देने के स्वच्छता ही सेवा अभियान के उद्देश्य के साथ पूरी तरह से मेल खाती

कटे हुए ई-कचरे से कीमती धातुओं को भी कुशलतापूर्वक निकाला जाएगा, जो चक्रीय



अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगा, और इस प्रकार यह स्वच्छ भारत मिशन के साथ संरेखित भी होगा।

स्वच्छता ही सेवा विषय पर बात करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि “महात्मा गांधी ने हमें स्वच्छता का गुण दिया, जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे जीवन का एक अंग बनाया”।

मंत्री महोदय ने विस्तार से बताया कि मई, 2014 में कार्यभार संभालने के तुरंत बाद, प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत को खुले में शौच से मुक्त देश बनाने के लिए 15 अगस्त, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि स्वच्छता मिशन कुछ ही वर्षों में संस्थागत हो गया और यह जीवन का एक प्रकार से एक सच्चा जन आंदोलन (मास मूवमेंट) बन गया है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि स्वच्छता अभियान केवल 2 अक्टूबर तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसने निरंतरता का एक



नया आयाम ग्रहण किया है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। उन्होंने कहा कि बापू जी की जयंती स्वच्छता संकल्प की पुनरावृत्ति मात्र है।

“रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर” का उल्लेख करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, “उत्तरदायित्वपूर्ण ई-कचरा निपटान के माध्यम से स्वच्छता, पर्यावरण और उनके स्वास्थ्य दोनों को संरक्षित करने में सफाईमित्र की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारती है। कौशल विकास के प्रस्ताव के साथ इसे विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर) के साथ संरेखित करते हुए स्थिरता को बढ़ावा देकर, प्रशिक्षण, परिवहन और प्रौद्योगिकी के आदर्श वाक्य में योगदान

देते हुए यह परियोजना बेहतर भविष्य के लिए कौशल, कुशल परिवहन और प्रौद्योगिकी के साथ अनौपचारिक क्षेत्र को सशक्त बनाकर खड़ी है। “

डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री मोदी के उचित ई-कचरा निपटान के बारे में जागरूकता बढ़ाने के आह्वान के प्रत्युत्तर में प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड (टीडीबी) और मुंबई स्थित पब्लिक लिमिटेड कंपनी मेसर्स इको रीसाइक्लिंग लिमिटेड के बीच रणनीतिक साझेदारी को भी स्वीकार किया। इस अभूतपूर्व ई-कचरा प्रबंधन परियोजना को प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड (टीडीबी) से 6.00 करोड़ रुपये की उदार वित्तीय सहायता मिली है।

“रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर” के बारे में बोलते हुए उन्होंने जोर देकर कहा कि “यह परियोजना भारत में ई-कचरा प्रबंधन के लिए एक ऐसा अग्रणी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है,

जिसका आज तक देश में कोई तुलनीय समकक्ष नहीं है। यह ई-कचरे के दीर्घकालिक प्रथाओं लिए एक पूरी तरह से नया मानक स्थापित करता है। ऐसी प्रथाएँ, जिनकी विशेषता एक अद्वितीय डिजाइन और कार्यान्वयन है और जो दक्षता, पहुंच और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को जोड़ती है।”

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि, “अब चूंकि हम ‘रीसाइक्लिंग ऑन व्हील्स स्मार्ट-ईआर’ की इस परिवर्तनकारी यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं और हम स्वच्छता ही सेवा अभियान में सक्रिय रूप से योगदान करते हुए स्वच्छता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और हमारे समर्पित सफाई

मित्रों के कल्याण के महत्व को सुदृढ़ करते हैं। और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी आह्वान के अनुरूप, हम मिलकर एक स्वच्छ और हरित भारत का निर्माण कर रहे हैं।”

अपने संबोधन में, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) की सचिव, डॉ. एन. कलैसेल्वी ने बापू के कथन “स्वच्छता ईश्वरीय भक्ति के

साथ ही आती है” का उल्लेख करते हुए पर्यावरण और जलवायु मानदंडों के अनुरूप भोजन, आश्रय और कपड़ों के तीन महत्वपूर्ण और बुनियादी घटकों के लिए गांधीजी के योगदान के बारे में जानकारी दी।

डॉ. कलैसेल्वी ने कहा कि देश भर में सभी 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाएं भौतिक सफाई और ई-सफाई दोनों ही में लगी

हुई हैं, जो अप्रचलित हो चुकी फाइलों का प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) और छंटनी करती हैं।

उन्होंने आने वाले सप्ताह से वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) और वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) में फाइलों के आवागमन (मूवमेंट) को तेज करने का भी आश्वासन दिया।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई को 2022-23 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई), भावनगर को वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसाइटी की श्रेणी के अंतर्गत ‘ख’ क्षेत्र में राजभाषा कीर्ति का तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार 14 सितंबर, 2023 को हिन्दी दिवस के

अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों द्वारा पुणे में प्रदान किया गया। पुणे (महाराष्ट्र) में 14-15 सितंबर, 2023 के दौरान तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का राजभाषा विभाग द्वारा आयोजन किया गया

था। प्रभारी, राजभाषा कार्यान्वयन डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय के अनुसार सीएसएमसीआरआई, भावनगर को यह

राष्ट्रीय पुरस्कार पिछले चार वर्षों में तीसरी बार प्राप्त हुआ है। सीएसएमसीआरआई, सीएसआईआर की गुजरात राज्य की एकमात्र राष्ट्रीय प्रयोगशाला है, जो सीधे मानव जाति को लाभ



वाले सौर नमक का निर्माण, अगली पीढ़ी के ईंधन और भोजन के स्रोत के रूप में समुद्री शैवाल की कृषि ऐसे कुछ प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र हैं जहां संस्थान ने अपनी उत्कृष्टता दिखाई है।

इस राष्ट्रीय सम्मान को सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के कर्मचारियों को समर्पित करते हुये निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन ने कहा कि अनुसंधान के अलावा संस्थान अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा नीति के महत्तम कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है।

पहुँचाने वाले विविध अनुसंधान और विकास क्षेत्रों में लगी हुई है। उन्नत जल विलवणीकरण मेम्ब्रेन/इकाइयों का विकास, उच्च गुणवत्ता

सीएसआईआर-सीरी द्वारा विकसित डीसी माइक्रोग्रिड को मिला 'बेस्ट टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन अवार्ड'

सीएसआईआर-सीरी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित 'रीन्यूएबल एनर्जी बेस्ड डीसी माइक्रोग्रिड सिस्टम' को रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के रक्षा जैव ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डीआईबीआईआर) की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में हल्द्वानी, उत्तराखंड में 14 से 16 अक्टूबर के दौरान आयोजित 'किसान जवान विज्ञान मेला' में 'बेस्ट टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आनंद अभिषेक एवं उनकी टीम द्वारा विकसित नवीकृत ऊर्जा आधारित डीसी माइक्रोग्रिड सिस्टम को यह सम्मान मेले में आयोजित समारोह में डॉ यू के सिंह, महानिदेशक (जीव विज्ञान), डीआरडीओ ने प्रदान किया।

डॉ आनंद एवं उनकी टीम द्वारा विकसित टेक्नोलॉजी सौर ऊर्जा से चालित है जिससे हर समय (24x7) बिजली प्राप्त की जा सकेगी। यह डीसी माइक्रोग्रिड प्रणाली एसी माइक्रोग्रिड की अपेक्षा अधिक कार्यकुशल है और इससे सिस्टम का नियंत्रण भी सरल हो जाएगा।

यह सिस्टम मार्केट में उपलब्ध विद्युत उपकरणों जैसे बीएलडीसी मोटर वाले पंखों, एलईडी ट्यूबलाइट, एलईडी बल्ब आदि के उपयोग के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा। वर्तमान में इस प्रणाली को संस्थान के



डिस्ट्रिब्यूशन परिसर में लगाया गया है जिसके द्वारा डिस्ट्रिब्यूशन परिसर में 24 घंटे बिजली आपूर्ति की जा रही है।

यह सिस्टम ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति के लिए

सार्वजनिक विद्युत ग्रिड से अलग स्वतंत्र रूप से भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि डीआरडीओ-डीआईबीआईआर द्वारा हल्द्वानी में आयोजित किसान-जवान-विज्ञान मेले में लगाई गई प्रदर्शनी में आत्मनिर्भर भारत अभियान

में योगदान देने के लिए विकसित जैविक खेती, सौर ऊर्जा, हाइब्रिड ऊर्जा प्रणाली आदि से संबंधित स्टॉलों के अलावा महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार हस्तशिल्प उत्पादों को भी प्रदर्शित किया गया था।

मेले में जिलेभर से आए किसानों, विद्यार्थियों एवं अन्य लोगों ने विकसित प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्राप्त की।

मेले का उद्घाटन माननीय रक्षा राज्य मंत्री श्री अजय भट्ट द्वारा किया गया।

मेले में सैन्य एवं अर्धसैनिक बलों को दिए जाने वाले पुरस्कारों के अलावा उद्योग और एमएसएमई सहित शोधकर्ताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों एवं अन्य कार्मिकों ने इस पुरस्कार के लिए डॉ आनंद और उनकी टीम को बधाई दी।

सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई, भावनगर में सीएसआईआर एकीकृत कौशल कार्यक्रम का आयोजन

ऊर्जा तथा पौष्टिक-औषधीय पदार्थों के लिए भविष्य के फीडस्टॉक उत्पन्न करने के मद्देनजर, सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर में “सूक्ष्म शैवाल विविधता और उनकी जैवप्रौद्योगिकी क्षमता” पर एक सीएसआईआर एकीकृत कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पीआरओ डॉ. के बी पाण्डेय के अनुसार 12 से 14 सितंबर 2023 तक चले इस कार्यक्रम का समन्वय सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई परिसर में एप्लाइड फाइकोलॉजी और

बायोटेक्नोलॉजी डिवीजन के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुबीर कुमार मंडल द्वारा किया गया।

इस प्रशिक्षण में गुजरात और ओडिशा के विभिन्न विश्वविद्यालयों के एम.एससी छात्रों, पीएचडी छात्रों और सहायक व्याख्याताओं सहित 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने सूक्ष्म शैवाल की रूपात्मक और आणविक पहचान, उन्हें प्रसंस्कृत करने और बड़े पैमाने पर कृषि तक बढ़ाने पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण की समाप्ति पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।



सीएसआईआर-निस्र ने 82वां सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-निस्र ने 10 अक्टूबर, 2023 को सीएसआईआर-निस्र परिसर में सीएसआईआर का 82वां स्थापना दिवस मनाया। ऊर्जा स्वराज आंदोलन के संस्थापक और आईआईटी बॉम्बे के प्रोफेसर प्रोफेसर चेतन सिंह सोलंकी (जिन्हें भारत के सोलर मैन के रूप में भी जाना जाता है) इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

कार्यक्रम की

शुरुआत निस्र की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल के स्वागत भाषण से हुई। प्रोफेसर अग्रवाल ने कार्यक्रम की रूपरेखा

तैयार करते हुए सभी उपस्थित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

उन्होंने सीएसआईआर स्थापना दिवस का सिंहावलोकन किया और कहा कि इस वर्ष का स्थापना दिवस इस मायने में अद्वितीय था कि सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाएं एक मंच पर एक साथ आई और सामूहिक रूप से अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन किया।

उन्होंने देश की तकनीकी प्रगति में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा निभाई



गई भूमिका पर प्रकाश डाला और बताया कि वे आत्मनिर्भर भारत में कैसे योगदान दे रहे हैं।

इसके बाद मुख्य अतिथि प्रोफेसर चेतनसिंह सोलंकी द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान का शीर्षक जलवायु परिवर्तन और सुधारात्मक कार्रवाइयों की छह-बिंदु समझ था। प्रोफेसर सोलंकी ने सीएसआईआर-निस्पर परिवार

के साथ ऊर्जा संरक्षण पर अपना अमूल्य ज्ञान साझा किया। उन्होंने कहा कि ऊर्जा के उपयोग और उपभोग के गलत तरीके ही जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। उन्होंने ऊर्जा का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने का अपना मंत्र भी दिया, जिसे वे एएमजी (बचें, कम करें और उत्पन्न करें) दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित करते हैं। एक तिहाई ऊर्जा से बचें जिसे हम अनावश्यक रूप से उपभोग करते हैं या अपने घरों में उसके उपयोग को आसानी से टाल सकते हैं, ऊर्जा कुशल उपकरणों का उपयोग करके ऊर्जा की बर्बादी को कम करें और अंत में, एक तिहाई ऊर्जा उत्पन्न करें। इस तरह हम ऊर्जा बचा सकते हैं और जलवायु परिवर्तन जैसी बड़ी समस्याओं से निपट सकते हैं। मुख्य अतिथि ने ऊर्जा संरक्षण की पूरी योजना में व्यक्तियों के रूप में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

इन प्रतिष्ठित वक्ताओं के अलावा, इस कार्यक्रम में कई प्रमुख गतिविधियाँ भी शामिल थीं :

पुस्तक विमोचन : सीएसआईआर-निस्पर की पहली द्विवार्षिक रिपोर्ट (2021-2023) जिसने विज्ञान संचार और विज्ञान नीति के



क्षेत्र में सीएसआईआर-निस्पर की उपलब्धियों और योगदान को प्रदर्शित किया, मुख्य अतिथि और निदेशक-निस्पर द्वारा संयुक्त रूप से इसे जारी किया गया। इसके अलावा, इस अवसर पर डॉ. सुकन्या दत्ता द्वारा लिखित 'एनुअल जर्नी द मैजिक ऑफ माइग्रेशन' नामक एक अन्य प्रकाशन भी विमोचित किया गया।

सेवानिवृत्त कार्मिकों का अभिनंदन : कार्यक्रम में निस्पर के सेवानिवृत्त कार्मिकों का अभिनंदन भी किया गया, जो वर्षों से इसकी सफलता की आधारशिला रहे हैं और जिन्होंने सेवा के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम : एक रमणीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिसमें सीएसआईआर-निस्पर के प्रतिभाशाली छात्रों और कार्मिकों तथा उनके परिवारजनों के प्रदर्शन ने संगीत, नृत्य और अन्य कलात्मक अभिव्यक्तियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

पुरस्कार वितरण : सीएसआईआर-निस्पर परिवार के भीतर असाधारण प्रतिभा को पहचानने और उसका उत्सव मनाने के लिए, इस भव्य अवसर की प्रत्याशा में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए एक पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया गया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस न केवल इसकी पिछली उपलब्धियों का जश्न है, बल्कि नवाचार, उत्कृष्टता और सहनशक्ति के एक आशाजनक भविष्य की झलक भी है। यह आयोजन संगठन की अपने मिशन और मूल्यों के प्रति स्थायी प्रतिबद्धता की याद दिलाता है। सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर), नई दिल्ली पूर्ववर्ती सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और सूचना स्रोत संस्थान (सीएसआईआर-निकेयर), नई दिल्ली और पूर्ववर्ती सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान (निस्टैड्स) के विलय के साथ वर्ष 2021 में अस्तित्व में आया।

यह भारत का एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान है जो विज्ञान संचार और नीति अध्ययन के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखता है।

संस्थान कई शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विविध विषयों को कवर करती हैं।

यह स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट स्तर पर विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान में अकादमिक कार्यक्रम भी प्रदान करता है।

सीएसआईआर-सीआरआरआई स्टील स्लैग रोड टेक्नोलॉजी को जर्मनी में मिला ग्लोबल अवार्ड



सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की स्टील स्लैग रोड टेक्नोलॉजी को जर्मनी का प्रतिष्ठित अवार्ड मिला है। ग्लोबल स्लैग पर्सनालिटी ऑफ द इयर अवार्ड 2023, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सतीश पांडेय को जर्मनी में दिया गया। वे इस वैश्विक सम्मान को प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय वैज्ञानिक हैं।

यह सम्मान वर्ष 2007 से प्रतिवर्ष, स्टील इंडस्ट्रीज में सॉलिड वेस्ट के रूप में उत्पन्न होने वाले आयरन एंड स्टील स्लैग के पर्यावरण अनुकूल उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये गए विशिष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

इस तकनीक से देश की पहली स्टील

स्लैग सड़क का निर्माण, वर्ष 2022 में सूरत, गुजरात में सीआरआरआई के तकनीकी मार्गदर्शन में किया गया था।

इसके उपरान्त एनएच-33 और एनएच-66 के झारखण्ड तथा महाराष्ट्र के सक्शन के निर्माण में भी स्टील स्लैग रोड तकनीक का सफल प्रयोग किया गया है। इसके साथ साथ सीमा सड़क संगठन ने भी स्टील स्लैग रोड टेक्नोलॉजी का सफल उपयोग चीन बॉर्डर पर अरुणाचल प्रदेश में स्टील स्लैग रोड निर्माण में किया है।

इस तकनीकी से बनी सड़कें कन्वेंशनल रोड की तुलना में अधिक मजबूत होने के साथ साथ लागत की दृष्टि से भी स्टील प्लांट्स से सस्ती पड़ती है।

स्लैग पर्सनालिटी ऑफ द इयर अवार्ड 2023, सीएसआईआर-सीआरआरआई द्वारा

विकसित की गयी स्टील स्लैग रोड टेक्नोलॉजी, भारत सरकार के वेस्ट टू वैल्यू विज्ञान को आगे बढ़ाती है।

सतीश पांडेय ने सीएसआईआर-सीआरआरआई की स्टील स्लैग रोड अनुसंधान परियोजना को लीड करते हुए देश में स्टील स्लैग रोड निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

गौरतलब है कि देश में करीब 19 मिलियन टन स्टील स्लैग का उत्पादन प्रतिवर्ष सॉलिड वेस्ट के रूप में विभिन्न स्टील प्लांट्स से होता है जो कि वर्ष 2030 तक बढ़कर लगभग 60 मिलियन टन हो जायेगा।

स्टील स्लैग का पर्यावरण अनुकूल निष्पादन स्टील प्लांट्स के लिए एक बड़ी समस्या है।

सीएसआईआर-सीरी और बिट्स-पिलानी द्वारा वीएलएसआई डिजाइन और टेस्ट (वी-डैट 2023) संगोष्ठी का आयोजन

वीएलएसआई डिजाइन एंड टेस्ट (वी-डैट) विषय पर बिट्स-पिलानी और सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 29 सितंबर से 01 अक्टूबर 2023 तक तीन-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 27वीं अंतरराष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का उद्घाटन एवं तकनीकी सत्र दिनांक 29 सितंबर, 2023 को बिट्स-पिलानी में हुआ। संगोष्ठी का समापन सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में आयोजित पैनल परिचर्चा एवं विदाई सत्र के साथ हुआ। संगोष्ठी में बिट्स-पिलानी व सीएसआईआर-सीरी सहित उद्योग जगत, शैक्षणिक व शोध संगठनों से 150 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। संगोष्ठी का उद्देश्य वीएलएसआई के क्षेत्र में शोध एवं विकास गतिविधि का संवर्धन करना एवं शोधार्थियों को इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में नवाचारों के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करना है।

उद्घाटन सत्र बिट्स-पिलानी में आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए बिट्स-पिलानी के ग्रुप वाइस चांसलर प्रोफेसर वी रामगोपाल राव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। अपने संबोधन में उन्होंने इंटरडिसिप्लिनरी शोध की आवश्यकता और महत्व पर बल देते हुए शोधार्थियों को नवाचार के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीरी के पूर्व निदेशक



प्रोफेसर चंद्रशेखर, वरिष्ठ इमेरिटस प्रोफेसर, बिट्स-पिलानी ने वीएलएसआई (वेरी लार्ज स्केल इंटीग्रेशन) की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए इस महत्वपूर्ण विषय को वर्ष 1989 में एमटेक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किए जाने के संस्मरण साझा किए। तीन-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्योग जगत, शैक्षणिक संस्थाओं और शोध संगठनों के लगभग 350 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। संगोष्ठी के तकनीकी सत्रों में प्रतिभागियों ने वीएलएसआई, सेमिकंडक्टर एवं अन्य अनुषंगी विषयों पर कुल 57 शोध पत्र प्रस्तुत किए।

सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 01 अक्टूबर, 2023 को आयोजित पैनल परिचर्चा एवं समापन सत्र में संस्थान के

निदेशक डॉ पी सी पंचारिया सहित बिट्स-पिलानी के कुलपति प्रोफेसर वी रामगोपाल राव, सीरी के पूर्व निदेशक एवं बिट्स-पिलानी के सीनियर एमेरिटस प्रोफेसर डॉ चंद्रशेखर, डॉ देवेश द्विवेदी, प्रो दिनेश शर्मा, प्रो जी एस विश्वेश्वरन, प्रो एम बालकृष्णन, प्रो अल्पना अग्रवाल, प्रो वीरेंद्र सिंह और डॉ सुचंदन पाल शामिल हुए। संस्थान के वैज्ञानिकों एवं संगोष्ठी के प्रतिभागियों सहित समापन एवं परिचर्चा सत्र में लगभग 350 व्यक्तियों ने प्रतिभागिता की।

परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्वान विशेषज्ञों ने वीएलएसआई क्षेत्र की व्यापक संभावनाओं पर चर्चा की। बिट्स-पिलानी के ग्रुप वाइस चांसलर



प्रोफेसर रामगोपाल राव ने विचारोत्तेक पैनल परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने आरंभिक संबोधन द्वारा सत्र की दिशा तय की। उन्होंने आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए देश में सेमिकंडक्टर इकोसिस्टम विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर प्रोफेसर चंद्रशेखर ने विख्यात राजनीतिज्ञ एवं आचार्य चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र के श्लोक "अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधं। अयोग्य पुरुषः नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः।" को समझाते हुए कहा कि ऐसा कोई अक्षर नहीं जिसका मंत्र न बन सके, ऐसी कोई जड़ी-बूटी नहीं जिसकी औषधि न बन सके, इसी प्रकार ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो अयोग्य अथवा अनुपयोगी हो, केवल उचित योजक (अर्थात

मिलाने/समझने वाला) मिलना दुर्लभ है। इसी प्रकार हमें इस श्लोक की मूल भावना को समझते हुए परस्पर सहयोग से देश में वीएलएसआई और सेमिकंडक्टर क्षेत्र में उद्यमिता को बढ़ाना होगा।

प्रोफेसर बालकृष्णन ने कहा कि हमारे देश के आईआईएम जैसे प्रबंध संस्थान आईआईटी के इंजीनियर से भरे हुए हैं परंतु जैसे ही हमारे इंजीनियर वहां अपना कार्य आरंभ करते हैं वह अपनी इंजीनियरिंग शिक्षा को भूल केवल एमबीए की शिक्षा का ही उपयोग करते हैं जबकि उनके द्वारा प्राप्त की गई इंजीनियरिंग की शिक्षा देश में सेमिकंडक्टर क्षेत्र के लिए नई टेक्नोलॉजी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक,

सीएसआईआर-सीरी ने कहा कि 'आत्मनिर्भर भारत' की संकल्पना को मूर्तरूप देने के लिए भारत में सेमिकंडक्टर क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि सरकार, शैक्षणिक संगठन, शोध व विकास संगठन तथा उद्योग, भारतवर्ष के चार स्तंभ हैं और विकसित राष्ट्र बनने के लिए इन चारों को मिलकर अपनी भूमिका निभानी होगी। इसके अतिरिक्त अन्य विशेषज्ञों ने भी अपने विचार रखे तथा संगोष्ठी के प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनकी जिज्ञासा शांत की। समापन सत्र के अंत में डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी तथा बिट्स-पिलानी के ग्रुप वाइस चांसलर प्रोफेसर रामगोपाल राव ने अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री प्रमोद तँवर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पीएमई ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया।

प्रोफेसर राज सिंह, पूर्व कार्यकारी निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने संगोष्ठी के दौरान आयोजित गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए संगोष्ठी में शामिल होने

के लिए औपचारिक रूप से सभी आमंत्रित अतिथियों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने आयोजन संबंधी सभी प्रकार की व्यवस्थाओं के लिए बिट्स-पिलानी के कुलपति प्रोफेसर रामगोपाल राव एवं सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया को धन्यवाद दिया।

समापन कार्यक्रम के उपरान्त अतिथि

वक्ताओं एवं वी-डैट 2023 के प्रतिभागियों ने प्रदर्शनी हॉल में आयोजित प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का अवलोकन किया और संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं शोध गतिविधियों पर वैज्ञानिकों से चर्चा की।

इस प्रकार बिट्स एवं सीरी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अंतरराष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी “वी-डैट 2023” संपन्न हुई।

सीएसआईआर-निस्पर वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने बच्चों के मध्य विज्ञान संचार में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार जीता

सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान (लखनऊ), सरकार द्वारा वर्ष 2022 के लिए प्रतिष्ठित ‘जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान’ से सम्मानित किया गया है। उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्थान ने 4 अक्टूबर 2023 को इस पुरस्कार की घोषणा की।

डॉ. गोरे को युवा पीढ़ी के लिए लोकप्रिय विज्ञान लेखन के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान हेतु पुरस्कार के लिए चुना गया है। पुरस्कार में एक पदक, एक प्रशस्ति पत्र और 51,000 रुपये की पुरस्कार राशि शामिल होगी।

वनस्पति विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ वनस्पति विज्ञान में डॉक्टरेट, डॉ. मनीष दिल्ली स्थित सीएसआईआर की घटक प्रयोगशाला सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) में वैज्ञानिक हैं। वह सीएसआईआर-निस्पर के लोकप्रिय विज्ञान प्रभाग में कार्यरत हैं।

वह दो प्रमुख पत्रिकाओं, लोकप्रिय

विज्ञान पत्रिका ‘विज्ञान प्रगति’ और शोध पत्रिका ‘भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका’ के संपादक हैं।

वह निस्पर में विज्ञान मीडिया संचार सेल के परियोजना अन्वेषक भी हैं।

डॉ. मनीष को बचपन से ही विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का जुनून था। आज तक, उन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी पर्यावरण, जैव विविधता, वैज्ञानिकों की जीवनियां और विज्ञान कथा जैसे विभिन्न विषयों पर लगभग 10 किताबें और 500 से अधिक लेख लिखे हैं।

उनका प्रभाव लिखित शब्द से कही आगे तक फैला हुआ है, क्योंकि उन्होंने रेडियो और टीवी के लिए लोकप्रिय विज्ञान लेखन में सक्रिय रूप से योगदान दिया है।

डॉ. मनीष ने 100 से अधिक राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलनों, कार्यशालाओं, सेमिनारों, वेबिनार और पुस्तक प्रकाशनों का समन्वय किया है।

विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर 50 से अधिक आमंत्रित व्याख्यानों के साथ, डॉ. मनीष विज्ञान संचार और विज्ञान कथा के क्षेत्र

में एक मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ हैं। वह समाज में वैज्ञानिक सोच पैदा करने के व्यापक उद्देश्य के साथ विज्ञान पर लिखते हैं।

डॉ. मनीष भारत के प्रमुख विज्ञान कथा लेखकों में से एक हैं। उन्होंने कई विज्ञान कथा कहानियों में योगदान दिया है। 325 सालाअदामी, पृथ्वीपुत्र, निरा हरिमानव और प्लेटफार्म नंबर 10 डॉ. मनीष मोहन गोरे की कुछ प्रसिद्ध विज्ञान कथाएँ हैं।

2012 में, उन्हें पूर्व भारतीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के प्रतिष्ठित ‘राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया था। उनके प्राप्त पुरस्कारों में ‘शिक्षा पुरस्कार’ (2015) और ‘राजभाषा गौरव पुरस्कार’ (2021) शामिल हैं।



सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र, गाजियाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम

**वार्षिक क्षमता निर्माण योजना
(एसीबीपी) पर कार्यशाला, 04 जुलाई 2023**

डीएसआईआर, सीएसआईआर, क्षमता निर्माण आयोग और सीएसआईआर-एचआरडीसी के प्रतिष्ठित अतिथि और प्रतिनिधियों ने 4 जुलाई, 2023 को सीएसआईआर-एचआरडीसी, गाजियाबाद में वार्षिक क्षमता निर्माण योजना (एसीबीपी) पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. एन कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर ऑनलाइन शामिल हुए।

खेल में नियम, विनियम और नैतिकता पर कार्यशाला, 14 जुलाई 2023
खेल में नियमों, विनियमों और नैतिकता पर एक दिवसीय कार्यशाला 14 जुलाई, 2023 को आयोजित की गई थी।

सीएसआईआर-एचआरडीसी के प्रमुख और सीएसआईआर-स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के सचिव डॉ. आर के सिन्हा ने अतिथि का स्वागत किया।

सीएसआईआर-आईएमटेक के निदेशक और सीएसआईआर-स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. संजीव खोसला ने उद्घाटन भाषण दिया।

विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के स्टाफ क्लब के बीस महासचिवों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

सीएसआईआर-एसपीबी नियम विनियम, खेल में नैतिकता और कामकाजी पेशेवर के लिए शारीरिक फिटनेस और सक्रिय जीवन शैली का महत्व रुचि के प्रमुख विषय थे। सिकोइया फिटनेस



एंड स्पोर्ट्स टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक और सीईओ श्री सुजीत पाणिग्रही ने प्रतिभागियों के बीच अपना अनुभव और ज्ञान साझा किया।



नवनि्युक्त वैज्ञानिकों के लिए प्रेरण कार्यक्रम, 17-26 जुलाई, 2023

सीएसआईआर के नवनि्युक्त वैज्ञानिकों के लिए 44वां प्रेरण कार्यक्रम 17-26 जुलाई 2023 के दौरान आयोजित किया गया।

11 विभिन्न प्रयोगशालाओं के उन्नतीस वैज्ञानिक/सीएसआईआर के अधिकारी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुख्य अतिथि, प्रोफेसर रवींद्र कुमार सिन्हा, कुलपति, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा, विशिष्ट अतिथि डॉ. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर और डॉ. आर के

सिन्हा, प्रमुख, सीएसआईआर-एचआरडीसी ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। यह 10 दिनों का कार्यक्रम था जिसमें सीएसआईआर के दृष्टिकोण, मिशन और सीएसआईआर की संस्कृति, राष्ट्रीय और वैश्विक एस एंड टी और औद्योगिक परिदृश्य, एस एंड टी में सामाजिक अनुप्रयोग, आईपीआर, खरीद, प्रशासनिक मामले, सीएसआईआर की वित्तीय प्रणाली, निवारक सतर्कता, लिंग संवेदीकरण आदि की हर बारीकियों को शामिल किया गया था। कार्यक्रम में अनुसंधान एवं विकास परिणामों के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव मूल्यांकन के समकालीन



पहलुओं, प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ बेहतर टीम प्रबंधन और अंतर-व्यक्तिगत कौशल, टीम निर्माण और समूह गतिशीलता, एस एंड टी संचार आदि जैसे सॉफ्ट कौशल को उन्नत करना को भी शामिल किया गया।

डॉ. एन कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर ने नए भर्ती हुए वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। उन्होंने युवा मन से अपनी अपेक्षाएं साझा कीं और उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने और सीएसआईआर को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रेरित किया।

प्रतिभागियों ने मेट्रोलॉजी लैब का दौरा किया। 24 जुलाई, 2023 को सीएसआईआर-एनपीएल, नई दिल्ली के प्रोफेसर वेणु गोपाल अचंता, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल ने युवा वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।

समापन सत्र में सीएसआईआर-आईएचबीटी के पूर्व निदेशक और विजिटिंग प्रोफेसर आईआईटी मंडी, डॉ. संजय कुमार शामिल हुए।

प्रो. वेणु गोपाल अचंता, निदेशक, सीएसआईआर-एनपीएल और प्रो. मनोज

कुमार धर, निदेशक, एसीएसआईआर सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

प्रतिष्ठित अतिथियों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और उनके साथ अपना समृद्ध अनुभव और ज्ञान साझा किया। प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये।

सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के नए शामिल निदेशकों के लिए नेतृत्व में उत्कृष्टता पर कार्यक्रम, 28-29 जुलाई 2023 : 28-29 जुलाई, 2023 के दौरान सीएसआईआर-एचआरडीसी परिसर में नए शामिल हुए निदेशकों के लिए नेतृत्व में उत्कृष्टता पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर ऑनलाइन शामिल हुए और अपने प्रेरक शब्दों के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन किया।



सीएसआईआर प्रयोगशाला के सात निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू (सीएसआईआर-सीएमआईआरआई), डॉ. सौविक मैती (सीएसआईआर-आईजीआईबी), डॉ. सुदेश कुमार यादव (सीएसआईआर-आईएचबीटी), डॉ. जबीर अहमद (सीएसआईआर-आईआईआईएम), डॉ. रामानुज नारायण (सीएसआईआर-आईएमएमटी) डॉ. अभय ए पाशिलकर (सीएसआईआर-एनएएल) और डॉ. अजीत कुमार शासनी (सीएसआईआर-एनबीआरआई) ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

एचआरडीसी प्रमुख डॉ. आर के सिन्हा ने सभी निदेशकों और गणमान्य व्यक्तियों



का स्वागत किया।

श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्र.), सीएसआईआर ने निदेशकों को संबोधित किया और उनके साथ अपना अनुभव और ज्ञान साझा किया।

क्षमता निर्माण आयोग के सदस्य—एचआर, डॉ. आर. बालासुब्रमण्यम ने भी प्रस्तुति दी और इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

सीएसआईआर मुख्यालय के विभिन्न प्रभागों के प्रमुखों ने निदेशकों के साथ बातचीत

की और अपने प्रभागों की गतिविधियों और जिम्मेदारियों को साझा किया।

एचआरडीसी के आतिथ्य और कार्यक्रम की सामग्री के संबंध में निदेशकों द्वारा कार्यक्रम की अत्यधिक सराहना की गई।

सीएसआईआर मुख्यालय में हिंदी सप्ताह का आयोजन

सीएसआईआर मुख्यालय में दिनांक 04.09.2023 से 12.09.2023 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

दिनांक 04.09.2023 को हिंदी सप्ताह का प्रारंभ शांति स्वरूप भटनागर सभागार परिषद मुख्यालय में कवि सम्मेलन तथा कविता पाठ प्रतियोगिता से किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संयुक्त सचिव (प्रशासन) श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता ने की और अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

कविता पाठ प्रतियोगिता में परिषद मुख्यालय में कार्यरत अधिकारियों कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आमंत्रित कवियों श्री महेन्द्र कुमार शर्मा एवं श्री शम्भू शरण मंडल ने अपनी हास्य विनोद पूर्ण कविताओं एवं गजलों से कार्यक्रम को रसमय बना दिया तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता के निर्णायकों की भूमिका भी निभाई।

हिंदी सप्ताह के दौरान काव्य पाठ, निबंध, शब्दावली/हिंदी व्यवहार (भाषान्तरण), टिप्पण/प्रारूपण, वाक् (वाद-विवाद)



आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें परिषद के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर प्रतिभागिता की।

दिनांक 12.09.2023 को हिंदी सप्ताह के समापन के अवसर पर संयुक्त सचिव (प्रशा.) की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष महोदय ने सरकारी कामकाज में हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में किए जाने का आह्वान किया।

तत्पश्चात विविध प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों की घोषणा की गई तथा विजेताओं को प्रशस्ति पत्र भी वितरित किये गए। साथ ही वर्ष भर मौलिक रूप से हिंदी में सरकारी कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत किया गया।

इसके बाद श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशा.) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या

में प्रतिभागिता करने हेतु प्रसन्नता व्यक्त की और हिंदी में भावाभिव्यक्ति की सरलता व सुगमता पर बल देते हुए सभी से आग्रह किया कि अपना अधिकाधिक दैनिक सरकारी कार्य मौलिक रूप से हिंदी में ही करें।

कार्यक्रम का आरंभिक संचालन सुश्री वंदिता, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी



ने किया और श्री सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ उप सचिव (के.का./राभा) ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया तथा हिंदी सप्ताह के सफल आयोजन हेतु सभी वरिष्ठ अधिकारियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देने के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीरी में हिंदी सप्ताह 2023 का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में दिनांक 8-14 सितंबर, 2023 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह पर्यन्त विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें सहकर्मी, परियोजना कार्मिक, प्रशिक्षार्थी आदि उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

हिंदी सप्ताह का विधिवत शुभारंभ 8 सितंबर, 2023 को आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत

कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह हिन्दी दिवस के अवसर पर

14 सितंबर, 2023 को आयोजित किया गया। यह संपूर्ण कार्यक्रम संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ पी सी पंचारिया के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। हिंदी दिवस समारोह में डॉ पंचारिया ने राजभाषा संदर्शिका 2022-23 का विमोचन किया। इस अवसर पर हिंदी सप्ताह एवं वर्ष पर्यन्त आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही हिन्दी में सर्वाधिक





कार्य करने वाले अनुभागों/प्रभागों को राजभाषा चल वैजयंती प्रदान की गई।

हिन्दी सप्ताह का विधिवत शुभारंभ दिनांक 8 सितंबर, 2023 को हुआ। संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने दीप प्रज्वलन कर सप्ताह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर आयोजन समिति के सदस्य श्री जय प्रकाश इन्दौरा, वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण एवं सहकर्मी उपस्थित थे।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने अपने संबोधन में हिंदी सप्ताह के शुभारंभ पर अपनी शुभकानाएं दीं। उन्होंने संस्थान में नियमित रूप से हिंदी गतिविधियों के आयोजन के माध्यम से हिंदीमय वातावरण बनाए रखने के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना की। संबोधन के अंत में उन्होंने सभी सहकर्मियों विशेषकर नए सहकर्मियों से अधिकाधिक संख्या में प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने कहा कि हिंदी पूरे देश की सर्वमान्य संपर्क भाषा भी है।

विगत कुछ समय से देश-विदेश में हिंदी का उपयोग और प्रतिष्ठा भी बढ़ी है। अपने संबोधन में उन्होंने हिंदी की विशेषताओं पर भी प्रकाश डालते हुए हिंदी की समावेशी प्रकृति की चर्चा की।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए आयोजन के संयोजक श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं की जानकारी दी।

हिन्दी सप्ताह का समापन 14 सितंबर 2023 को हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने हिन्दी सप्ताह के दौरान एवं वर्ष पर्यन्त आयोजित प्रतियोगिताओं के 55 विजेताओं को पुरस्कृत किया। हिन्दी में सर्वाधिक एवं विशिष्ट कार्य करने वाले प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुभागों/प्रभागों को राजभाषा चल वैजयंती प्रदान की गई। साथ ही गतवर्ष केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के भाषा शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत हिन्दी प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सहकर्मियों को भी प्रमाणपत्र वितरित किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण, वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जय प्रकाश इन्दौरा

सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण एवं सहकर्मी उपस्थित थे।

डॉ पी सी पंचारिया निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका और इसके योगदान की चर्चा की। उन्होंने हिन्दी के प्रभाव और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यद्यपि भारत बहुभाषी देश है परंतु हिन्दी की लोकप्रियता, पहचान और बोलने-समझने वालों की संख्या के आधार पर इसे ही संविधान निर्माताओं ने राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया।

उन्होंने बताया कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने में हिन्दी की बड़ी भूमिका रही है। हिन्दी दिवस के इतिहास पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी को अपनी भाषा के इतिहास की जानकारी भी होनी चाहिए। डॉ पंचारिया ने विज्ञान और तकनीकी के साथ-साथ संस्थान में प्रतियोगिताओं के आयोजन में भी नवाचार लाने पर बल दिया। अंत में उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए सभी प्रतिभागियों को अपने प्रदर्शन के साथ-साथ दैनिक कार्यालयी कार्यों में और अधिक सुधार लाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर हिन्दी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर ने अपने संबोधन में माननीय केंद्रीय गृहमंत्री

श्री अमित शाह जी के हिन्दी दिवस संदेश के मुख्य बिंदुओं को उद्धृत किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हमारा देश बहुभाषी है जिसमें अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। उन्होंने कहा कि संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाएँ हमारी अपनी भाषाएँ हैं और सम्मान की अधिकारिणी हैं।

हिन्दी दिवस समारोह के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने संस्थान के राजभाषा कार्यकलापों से संबंधित राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा तैयार की गई वार्षिक पत्रिका "राजभाषा संदर्शिका 2022-23" का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर उनके साथ एवं हिन्दी सप्ताह आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक तथा प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण भी उपस्थित थे। डॉ पी सी पंचारिया ने इस प्रकाशन के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ की सराहना की।

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए लागू की गई राजभाषा चल वैजयंती योजना के विजेता अनुभागों/प्रभागों को भी इस अवसर पर चल वैजयंती एवं प्रमाण पत्र भेंट किए गए।

प्रशासनिक वर्ग : इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक विशिष्ट कार्य करने के लिए प्रशासन प्रभाग को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई। श्री जय शंकर शरण, प्रशासन

नियंत्रक ने प्रभाग की पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया।

तकनीकी वर्ग : इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक विशिष्ट कार्य करने के लिए भवन निर्माण एवं अनुरक्षण (सिविल) अनुभाग को प्रमाण पत्र सहित

राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई। श्री अशोक नायक, अधीक्षण अभियंता ने अनुभाग की पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया।

वैज्ञानिक वर्ग : इस वर्ग में हिन्दी में सर्वाधिक/विशिष्ट कार्य करने के लिए शोध एवं विकास सुविधाएँ को प्रमाण पत्र सहित राजभाषा चल वैजयंती भेंट की गई। श्री अशोक चौहान, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक ने अपनी पूरी टीम के साथ पुरस्कार प्राप्त किया। इससे पूर्व इस अवसर पर हिन्दी कविता पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता के विजेताओं ने पुरस्कृत कविताओं का वाचन भी किया।

संस्थान में राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए लागू पाँच प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अगस्त 2022 से जुलाई 2023 की अवधि के दौरान अपना दैनिक कामकाज हिन्दी में करने के लिए 52 सहकर्मियों को नकद पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम संचालन के दौरान संयोजक श्री रमेश बौरा ने सभी प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के नामों का उल्लेख किया।

हिन्दी दिवस समारोह का संचालन



वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए उन्होंने बताया कि लगभग इसी अवधि में देशभर के केंद्रीय कार्यालयों एवं अन्य संस्थाओं में अपनी-अपनी सुविधानुसार हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी माह आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पूर्व में लिए गए निर्णय के अनुपालन में संस्थान में विगत अनेक वर्षों से हिन्दी सप्ताह से पूर्व लगभग प्रतिमाह एक हिन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

अंत में प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने अपनी विशिष्ट शैली में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया के सतत मार्गदर्शन हेतु आभार व्यक्त किया तथा सभी अधिकारियों, प्रतियोगिताओं के निर्णायकों व संचालकों सहित सभी प्रतिभागियों को आयोजन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।